

## मौन

रघुराज सिंह बहुत खुश थे। उनके लड़के से अपनी लड़की का रिश्ता करने की इच्छा से अजमेर से एक संपन्न एवं सुसंस्कृत परिवार आया था। रघुराज सिंह का लड़का सेना में अधिकारी है। उनके दो अन्य लड़के उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

लड़की के पिता ने रघुराज सिंह से कहा - “हम आपसे एवं आपके परिवार से पूरी तरह संतुष्ट हैं। आप भी हमारी लड़की को देख लें एवं हमारे परिवार के बारे में पूरी जानकारी कर लें।”

रघुराज सिंह ने कहा - “जानकारी लेने की कोई जरूरत नहीं है। हम भी आपसे पूरी तरह संतुष्ट हैं।”

लड़की के पिता ने पूछा - “आपकी कोई माँग हो तो हमें बताने की कृपा करें।”

रघुराज सिंह बोले - “हमारी कोई माँग नहीं है। बस, चाहते हैं, लड़की ऐसी हो जो परिवार में विघटन न कराए। चाहता हूँ, तीनों भाई मिलकर रहें।”

“इससे बढ़कर क्या बात हो सकती है। जब बच्चों को अच्छे संस्कार मिलते हैं तो पूरा परिवार एक सूत्र में बँधा रहता है।” लड़की के पिता ने विनम्रतापूर्वक कहते हुए पूछा - “साहब, आप कितने भाई हैं?”

रघुराज सिंह ने कहा - “तीन भाई, एक बहिन”

लड़की के पिता ने पूछा - “आपके भाई क्या करते हैं?”

रघुराज सिंह - “सबके निजी धंधे हैं।”

लड़की के पिता ने पूछा - “आपने अपने किसी भाई को बुलवाया नहीं?”

रघुराज सिंह झिझकते हुए बोले - “अजी, हम भाइयों में बोलचाल बंद है।”

अचानक वहाँ खामोशी छा गई। प्रश्न और उत्तर दोनों ही मौन थे।

× × ×

× × ×

× × ×

## असाधारण

मुझे जोधपुर जाना था। बस आने में देरी थी। अतः बस स्टॉप पर बस के इंतजार में बैठा था। वहाँ बहुत से यात्रियों का जमघट लगा हुआ था।

## परिचय

**जन्म :** १९६६,

**परिचय :** त्रिलोक सिंह ठकुरेला जी ने कुंडलिया छंद के विकास के लिए अद्वितीय कार्य किया है।

**प्रमुख कृतियाँ :** ‘नया सवेरा’ (बाल साहित्य), ‘काव्यगंधा’ (कुंडलिया संग्रह), ‘आधुनिक हिंदी लघुकथाएँ’, ‘कुंडलिया छंद के सात हस्ताक्षर’, ‘कुंडलिया कानन’, ‘कुंडलिया संचयन’, ‘समसामयिक हिंदी लघुकथाएँ’, ‘कुंडलिया छंद के नये शिखर’ आदि संपादन।

## गद्य संबंधी

यहाँ दो लघुकथाएँ दी गई हैं। प्रथम लघुकथा में त्रिलोक सिंह ठकुरेला जी ने लोगों की कथनी और करनी में अंतर पर करारा प्रहार किया है। दूसरी लघुकथा में आपने एक पॉलिश करने वाले बालक के स्वाभिमान को दर्शाया है। इन लघुकथाओं के माध्यम से लेखक ने संदेश दिया है कि हमारी सोच और व्यवहार में समरूपता होनी चाहिए। स्वाभिमान किसी में भी हो सकता है। हमें सभी के स्वाभिमान का आदर करना चाहिए।

सभी बातों में मशगूल थे अतः अच्छा-खासा शोर हो रहा था ।

अचानक एक आवाज ने मेरा ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया । एक दस वर्षीय लड़का फटा-सा बैग लटकाए निवेदन कर रहा था - “बाबू जी, पॉलिश करा लो ।”

मेरे मना करने पर उसने विनीत मुद्रा में कहा - “बाबू जी, करा लो । जूते चमका दूँगा । अभी तक मेरी बोहनी नहीं हुई है ।”

मैं घर से जूते पॉलिश करके आया था अतः मैंने उसे स्पष्ट मना कर दिया ।

वह दूसरे यात्री के पास जाकर विनय करने लगा । मैं उसी ओर देखने लगा । वह रह-रहकर यात्रियों से अनुनय-विनय कर रहा था - “बाबू जी, पॉलिश करा लो । जूते चमका दूँगा । अभी तक मेरी बोहनी नहीं हुई है ।”

मेरे पास ही एक सज्जन बैठे थे । वे भी उस लड़के को बड़े गौर से देख रहे थे । शायद उन्हें उसपर दया आई । उन्होंने उसे पुकारा तो वह प्रसन्न होकर उनके पास आया और वहीं बैठ गया ।

“बाबू जी, उतारो जूते ।”

उन्होंने कहा- “भाई, पॉलिश नहीं करानी है । ले, यह पाँच रुपये रख ले ।”

“क्यों बाबू जी ?” उसने बड़े भोलेपन से कहा ।

वे सज्जन बड़े प्यार से बोले - “रख ले । तेरी बोहनी नहीं हुई है, इसलिए ।”

लड़का झटके से खड़ा हुआ- “बाबू जी, भिखारी नहीं हूँ । मेहनत करके खाना चाहता हूँ । बिना पॉलिश किए रुपये क्यों लूँ ?” यह कहते हुए वह आगे बढ़ गया ।

पॉलिश करने वाले लड़के के चेहरे पर स्वाभिमान का असाधारण तेज देखकर लोग दंग रह गए ।

(‘समसामयिक हिंदी लघुकथाएँ’ से)

— ० —



“बाल श्रम” पर लगा प्रतिबंध कितना सफल सिद्ध हुआ है, इसकी जानकारी के लिए अपने परिसर का सर्वेक्षण कीजिए । सर्वेक्षण के आधार पर अपनी रपट/ अनुभव लिखिए ।



स्पर्धा के लिए ‘अतिथि देवो भव’ विषय पर भाषण तैयार करके सुनाइए ।



‘संयुक्त परिवार आजकल विघटित होते जा रहे हैं, इसपर जानकारी पढ़कर निबंध लेखन कीजिए ।



रेडियो/दूरदर्शन, यू ट्यूब से राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी) की जानकारी सुनिए ।

## शब्द संसार

विघटन सं. पुं. (सं.) = अलग करना

जमघट पुं. सं. (हिं) = भीड़

अनुनय पुं. सं. (सं.) = खुशामद, विनय

मुहावरा

दंग रह जाना = आश्चर्यचकित होना